ISSN – 2348-7143

Impact Factor – 3.452

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

December - 2017

SPECIAL ISSUE-XXI

भाषा, साहित्य आणि अनुवाद
भाषा, साहित्य और अनुवाद
Language, Literature and Translation

अतिथी संपादक :
डॉ. भाऊसाहेब गमे
प्राचार्य,
महात्मा गांधी विद्यामंदिरचे कला व वाणिज्य महाविद्यालय,
येवला, जि. नाशिक (महाराष्ट्र)

मुख्य संपादक :
डॉ. धनराज धनगर
सहा. प्राध्यापक,
महात्मा गांधी विद्यामंदिरचे कला व वाणिज्य महाविद्यालय,
येवला, जि. नाशिक (महाराष्ट्र)

सहयोगी संपादक : **प्रा. रघुनाथ वाकळे** (हिंदी विभाग), **प्रा. कमलाकर गायकवाड** (इंग्रजी विभाग)

This Journal is indexed in :
UGC Approved Journal List No. 40705 & 44117
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

RESEARCH JOURNEY

SWATIDHAN PUBLICATIONS

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor : (CIF) 3.452, (SJIF) 3.009, (GIF) 0.676 (2013)
Special Issue 31 : भाषा, साहित्य आणि अनुवाद
UGC Approved No. 40705 & 44117
2348-7143
December 2017

अनुक्रमणिका

अ. नं.	शोध निबंधाचे शीर्षक	लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
	मराठी विभाग		
१	भाषा, साहित्य आणि अनुवाद यांचा सहसंबंध	डॉ. पृथ्वीराज तौर	०५
२	भाषांतर : स्वरूप आणि व्याप्ती	डॉ. भाऊसाहेब [illegible]	१०
३	अनुवाद संज्ञा-संकल्पना	डॉ. [illegible] पाटील	१४
४	अनुवादित साहित्य : संकल्पना व स्वरूप	डॉ. [illegible]	१७
५	अनुवाद प्रक्रिया : स्वरूप	डॉ. [illegible]	[illegible]
६	अनुवाद प्रक्रिया व पद्धती	डॉ. [illegible]	३१
७	अनुवादाचे प्रकार आणि मराठी साहित्य	डॉ. उज्ज्वला [illegible], सुनील [illegible]	३५
८	अनुवाद प्रक्रिया आणि सृजनशीलता	डॉ. [illegible]	४२
९	भाषांतर आणि अनुवाद	डॉ. [illegible]	४७
१०	लोकसमुहाकडून पौराणिक विषयावर अनुवादित झालेली मधुरा लभान बोलीतील लोकगीते	डॉ. भगवान [illegible]	५२
११	ख्रिस्तपुराण : रूपांतर, लिप्यंतर, प्रकारांतर व भाषांतर	प्रा. विनय मडगावकर	५७
१२	अनुवादाचे सांस्कृतिक महत्त्व	प्रा. [illegible] पवार	६३
१३	अनुवाद : संकल्पना व महत्त्व	डॉ. [illegible]	६७
१४	काव्यानुवाद 'जगताना' : साहित्य, भाषा व अनुवाद	प्रा. [illegible]	६९
१५	भारतीय कवितांचे मराठी अनुवाद	डॉ. निशा [illegible]	७२
१६	अन्य भाषांमधून मराठी भाषेत अनुवादित झालेले सण : एक आकलन	डॉ. [illegible]	७५
१७	एक अजरामर अनुवाद – 'एक होता कार्व्हर'	डॉ. [illegible]	७८
१८	प्रसारमाध्यमे आणि इतर क्षेत्रातील अनुवाद संधी	डॉ. [illegible]	८१
	हिंदी विभाग		
१९	अनुवाद साहित्य का स्वरूप एवं संकल्पना	डॉ. व्ही. बी. सूर्यवंशी	८७
२०	अनुवाद : स्वरूप, आवश्यकता एवं समस्या	डॉ.अनिता [illegible], डॉ.[illegible]	९१
२१	अनुवाद : स्वरूप और विवेचन	[illegible]	[illegible]
२२	अनुवाद साहित्य कि व्याप्ती और प्रासंगिक महत्त्व	डॉ. [illegible]	[illegible]
२३	अनुवाद एवं प्रयोजनमुलक हिंदी	डॉ. गजानन [illegible]	९९
२४	अनुवाद : स्वरूप, महत्त्व एवं उपयोगिता	डॉ. सुनिता [illegible]	१०३
२५	अनुवाद साहित्य : स्वरूप, संकल्पना एवं आवश्यकता	प्रा. [illegible]	१०६

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal | ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 3.009, (GIF) -0.676 (2013) | December 2017
Special Issue 21 : भाषा, साहित्य आणि अनुवाद
UGC Approved No. 40705 & 44117

अनुवाद साहित्य का स्वरुप एवं संकल्पना

डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी
हिंदी विभागाध्यक्ष,
कमवार भाऊसाहेब हिरे कला महाविद्यालय,
निमगांव, तह. मालेगाव, जिला नासिक (महा)
मोबाईल - ९४२१६०४६२४

आदमी की सबसे मुख्य पहचान उसकी बोलने की शक्ती है। वह अपने मन के सुख-दुख की बात दूसरों को बता सकता है। इसका माध्यम है भाषा। अगर संसार के समस्त लोग एक ही भाषा बोलते तो सभी एक-दूसरे की बातें आसानी से समझ लेते, मगर प्रत्येक देश में ही अनेक भाषाएँ होती है। हर राष्ट्र की एक प्रमुख राष्ट्रभाषा होती है, अन्य कई भाषाएँ एवं उपबोलिया बोली जाती है। मानव मन में सवाल उठता हैं कि जब दो भिन्न भाषा-भाषि सज्जनों को आपस में वार्तालाप करना पड़ता है तब कोन-सा उपाय किया जाय? इसका कारगर उपाय अनुवाद है। दोनों भाषाएँ जाननेवाला तीसरा आदमी उन दोनों लोगों की बातें बारी-बारी से अनूदित करके सुनाता हे। पत्र-व्यवहार में मौखिक अनुवाद की जगह पर लिखित अनुवाद से काम लिया जाता हे।

अनुवाद का स्वरुप :-

अनुवाद संस्कृत का मूल तत्सम शब्द हे, जिसका संबंध `वद` धातु से है जिसका अर्थ - बोलना या कहना। `वद` धातुसे जुडा `धञ्` प्रत्यय इसे भाववाचक संज्ञा बनाकर `वाद` बना देता है। `वाद` अर्थात कहने की क्रिया या कही हुयी बात। इस वाद शब्द के `पीछे` बाद में और अनुवर्तिता आदि अर्थो में प्रयुक्त `अनु` उपसर्ग से अनुवाद शब्द बना हे। अतः अनुवाद का शब्दिक अर्थ हुआ किसी कही हुअी बात के बाद कहना अथवा पुनः कथन।

अनुवाद में दो भाषाओं की सामग्री होती है। प्रथम भाषा में जो बात है उसे द्वितीय भाषा में उलथा करके बताया जाता है। यह उलथा करने की प्रक्रिया हिंदी में अनुवाद कहलाती है। इसके पर्याय भाषा में बदलते हैं। अंग्रेजी में इसे Translation कहा जाता है। जो कि 'Trans' तथा Lation के योग से बना है। Trans का अर्थ - पार और Lation का अर्थ ले जाने की क्रिया के अर्थ में आता है। अतः Translation का अर्थ हुआ - एक पार से दुसरे पार तक ले जाना।

चितामणिकोश में अनुवाद का अर्थ है - `प्राप्तस्य पुनः कथने` वैदिक संस्कृत के प्राचीनतम रुप में उपसर्ग का प्रयोग मुल क्रिया से अलग होता रहा हैं। बाद में दोनों को मिलाकर किया जाने लगा। अनुवाद के `अनु` `वद` का भी प्रयोग मिलता है। ऋग्वदे में - `उन्वेको वदति यदद्ति` यहा अनु-वददति का अर्थ है - दुहाराना है । या पीछे से कहना अनुवाद का अर्थ स्पष्ट करते हुये डॉ. त्रिभुवन राय का कहना है - ``जब एक भाषा में लिखी अथवा कही गयी बात को किसी भाषा में भिन्न प्रकार से लिखा या कहा जाता है तो वह रुपांतरण अथवा एक भाषिक अनुवाद होता है। इसके विपरित जब एक भाषा में लिखी अथवा कही बात को किसी दूसरी भाषा में कहा अथवा लिखा जाता है तो उसे भाषान्तरण अथवा द्विवभाषिक अनुवाद कहते है।`` अनुवाद की प्रक्रिया में जो दो भाषाएँ आती हैं उनमें प्रथम भाषा है जिसकी सामग्री का अनुवाद किया जाय । इसे मूलभाषा व स्त्रोतभाषा भी पुकारते है।

अनुवाद की तकनीकी व्याख्या में प्रथम भाषा को अंग्रेजी में सोर्स लैंग्वेज या संक्षेप में एस.एल. पुकारा जाता है। या द्वितीय भाषा वही है जिसमें सामग्री अनुदित की जाती है। `अनुवाद` की परिभाषा सामान्यतया इस प्रकार दी जा सकती है- ``अनुवाद मूलभाषा की सामग्री के भावों की रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा में बदल देना है।`` इन परिवर्तन की कई प्रणालियाँ प्रचलित हैं। कहीं मूल रचना के शब्द - प्रतिशब्द का अनुवाद किया जाता है। कही मूल रचना भाव का अनुवाद होता है। कहीं मूल रचना की छाया के अनुवाद से ही संतोष किया जाता है। कभी-कभी एक भाषा से दूसरी भाषा में सीधे अनुवाद करने के बजाय दूसरी भाषा में पहले किए अनुवाद का तीसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है। जर्मन, रुसी, फ्रेंच आदि भाषाओं से बंगला, हिंदी आदि में जो अनुवाद होता है वह अक्सर अंग्रेजी अनुवाद के माध्यम से ही किया जाता है।

संसार में विभिन्न भाषाओं के व्यवहार की प्रवृत्ति अत्याधिक पुरानी है। इसीलिए अनुवाद की काफी पुरानी विधा रहा है। अनुवाद यदर्यापि भारत में भी चला था, तो भी पश्चिम में ही अनुवाद नामक विधा के उद्गम और विकास का ठोस इतिहास मिलता है। रोमवासियों ने ३०० ई.पू. में ग्रीक भाषा के माध्यम से ग्रीक संस्कृति का बहुत कुछ अपना लिया। इस में अनुवाद उनका सहायक रहा है। बाद में पश्चिम ने अरब देश कि संस्कृति, ज्ञान भंडार आदि को अनुवाद के जरिये अपनी भाषाओं में स्वीकार कर लिया। बीसवी सदी को कई भाषा-विज्ञान-पंडितो ने `अनुवाद` या `पुनस्सृजन` का नाम प्रदान है। इस सदि में राजनीतिक एवं सामाजिक कारणों से संसार के बड़े एवं छोटे देशों के [illegible] घनिष्ट बनने की अनिवार्यता अनुभव होने लगी। बहुराष्ट्रीय संस्थाएँ अनेक देशों में अपनी शाखाएं स्थापित करती गई। संयुक्त राष्ट्रसंघ और यूनेस्को अपना कार्य-कलाप संघ द्वारा मान्यता प्राप्त कई विभिन्न भाषाओं में करने के लिए बाध्य हो गए। अमरीका और रुस में थोक रुप में वैज्ञानिक पत्रिकाओं का अनुवाद किया जाने लगा। बताया जाता है कि, यूरोपीय संघ (EEC) करीब १६०० अनुवादकों से अनुवाद कराता था। स्टिट्ज़वार्ड के अनुसार १९६७ में प्रतिवर्ष ८०,००० वैज्ञानिक पत्रिकाओं का अनुवाद होता था।

अनुवाद की वैज्ञानिकता :-

अनुवाद के लिए प्रशिक्षण की चर्चा से यह प्रश्न उठता है कि क्या अनुवाद ऐसा वैज्ञानिक विषय है जिसमें कुछ सिध्दांत, फॉर्मूले, नियम आदि हैं जिनको तोडा नहीं जा सकता? इसका उत्तर संक्षेप में इस प्रकार दिया जा सकता है - ``हाँ, वैज्ञानिक विषय है।`` प्रारंभ में यूरोप में भी प्राकृतिक विज्ञान के अचूक सिध्दांतो को ही विज्ञान-सिध्दांत कहते थे। भाषाओं के वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध अध्ययन को भाषा-विज्ञान नाम दिया गया। इसी परंपरा में आगे चलकर अनुवाद के क्षेत्र में भी अनुवाद-विज्ञान का विकास हो सका। अंग्रेज विद्वानों ने इसे 'Translatology' नाम दिया। हम भाषा के अध्ययन के प्रसंग पर व्याकरण का विशेष स्मरण करते है। भाषा, व्याकरण का सबसे प्रामाणिक और सुगठित स्वरुप संस्कृत के पाणिनीय व्याकरण में मिलता है। पाणिनीय व्याकरण ने हर बात पर अकाट्य नियम सूत्रों में निर्धारित किए हैं। वर्णों की संधि, संज्ञा शब्दों का लिंग, कारक, क्रिया, अव्यय उपसर्ग और समास के विभिन्न प्रकरणों में शुध्द प्रयोग और अशुध्द प्रयोग को व्याकरणकार स्पष्टतः घोषित करते है।

आधुनिक भारतीय भाषाओं ने तो अंग्रेजी के प्रभाव को भी अपनी वाक्य-रचना में अनेक प्रकार से स्वीकार किया। इसके फलस्वरुप अब वाक्यगत व्याकरण में कुछ प्राचीन प्रवृत्ति है, कुछ अंग्रेजी

प्रकाश है। यह एक नवविकसित स्थिति है। अनुवाद के प्रमुख सैध्दांतिक विचार सामान्य अनुवादक के लिए उपयोगी हैं। वह उनका ऐतिहासिक परिचय पा सकता है। विभिन्न विद्वानों का मार्गदर्शन भी प्राप्त कर सकता है। जब अनुवादक को अनुवाद करना पड़ता है तब उसे अनेक व्यावहारिक समस्याओं से जूझना पड़ता है। यों जूझते समय उपर्युक्त मार्गदर्शन से सहायता मिलती है।

अनुवाद मानवों के मेल-मिलाप का साधन सिध्द हुआ है। विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों के लोगों को मिलाने में अनुवाद सेतु का काम करता है। ग्रंथों के विषय में तो अनुवाद नया खजाना खोलने का 'सम-सम' है। संसार की एक भाषा की कोई विशिष्ट कृति जब अनूदित होती है तब दूसरी भाषा बोलनेवालों को भी वह कृति प्राप्त होती है। जलधि की तरंग की नीति से ग्रंथ का परिचय और फैल जाता है। विश्व का सांसकृतिक इतिहास प्रमाणित करता है कि विश्व की प्रमुख भाषाओं की प्रमुख रचनाएं अन्य अनेक भाषाओं में अनुवाद के जरिये पहुँची हैं।

विश्व-साहित्य की श्रेष्ठ कृतियों का संक्षिप्त परिचय देनेवाले ग्रंथ अंग्रेजी में प्रकाशित हुए हैं। इनको झाँकी-भर लेने से हम समझ पाते हैं कि विभिन्न विश्व-भाषाओं की श्रेण्य कृतियाँ सारी विश्वभाषाओं में अनुवाद के द्वारा पहुँची हैं। होमर का इलियड एवं ओडिसी, विलियम चासर नामक अंग्रेज कवि की कैंटरबरी टेयिल्स, लैटीन कवि डांटे की डिवाइन कोमडी, फ्रेंच उपन्यासकार ह्यूगो का ला मिसाबिल, इताली के साहित्यकार बोकाचियो का 'देकामरण' आदि सारे योरप के शिक्षित समाज पर अनुवाद के माध्यम से ही अपनी धाक जमा सके थे।

चार्ल्स डार्विन का 'ओरिजिन ऑफ स्पीसिस' जीवविज्ञान का युग प्रवर्तक ग्रंथ था। रूसो की फ्रेंच रचनाएँ फ्रांस की क्रांति की प्रेरक सिध्द हुई। यों फ्रेंच साहित्य के साहित्यकार बोदलेयर, मेल्लार्मे आदि की रचनाएँ सारी विश्वभाषाओं में प्रतीकवाद एवं रोमांटिकतावाद के उद्‌गम का कारण हो गई। आगे चलकर सिंगमंड फ्रायड की जर्मन पुस्तक मनोविज्ञान की भूमिका और अन्य पुस्तकें विश्व में प्रचलित हो सकीं। योरप में यथार्थवाद, अतियथार्थवाद, अस्तित्ववाद, आदि जितने भी जीवन दर्शन और साहित्यिक दर्शन मुख्यतः फ्रांस में प्रारंभ हुए, उनका प्रचार यदि पूरे विश्व में हो सका तो अनुवाद को इसका श्रेय है।

संसार में जितने भी प्रमुख धर्म हैं, उनके आदिग्रंथ अपने देश की विशेष भाषा में लिखे गए थे। उनमें से अधिकांश के अनुयायी विश्व के विभिन्न देशों में बस गए है। उन देशों में इन धर्मों का प्रचार भी किया गया। अनुवाद के बिना यह संभव न होता। विश्व में सबसे अधिक भाषाओं में सर्वाधिक अनूदित ग्रंथ बाइबल है। पाक कुरान का तर्जुमा जिन प्राच्य भाषाओं में किया गया उनमें प्रमुख है हिब्रू, जावा, मलया, फारसी, पुश्तो, तुर्की, चीनी, बर्मी, सिरियक और भारतीय भाषाएँ, पश्चिम की प्रायः सभी भाषाओं में भी कुरान को अनूदित किया गया। बडी संख्या में पालि व प्राकृत ग्रंथ इन देशों की भाषाओं में अनूदित हुए। पालि व प्राकृत ग्रंथों का अनुवाद तथा व्याकरण ग्रंथ कई जर्मन विद्वानों ने प्रस्तुत किए।

निष्कर्ष :-

रुप में हम कह सकते है कि भारतीय नवजागरण मे अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। नवजागरण चाहे वह विश्व का हो, तथा यूरोप का हो या देश की भाषाओं का अनुवाद सभी में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हमारे आस-पास जो घटित हो चुका है या घटित हो रहा है, उसके प्रति जागरुकता का परिणाम है- अनुवाद कार्य। हिंदी साहित्य के आधुनिक युग को हम आधुनिकता का

इसलिये कहते है कि उस समय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ऐतिहासिकता को सही दिशा प्रदान किया। भारतेन्दुजी ने जो संस्कृत नाटकों का रुपांतरण प्रस्तुत कर रहे थे, दूसरी ओर महान कलाकार शेक्सपियर के नाटको का भी अनुवाद कर रहे थे। अनुवाद की आवश्यकता राष्ट्रीय एक और अखण्डता के लिये, दूसरे देश की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जानकारी के लिए अनुवाद आवश्यक है। साथ ही साथ, देश का व्यापार बढाने के लिए अनुवाद महत्वपूर्ण है। अत: अनुवाद विभिन्न भाषा, संस्कृति, धर्म, व्यापार, आदि का रामसेतू है। विश्व में कि भाषाओं को जोडने का काम केवल 'अनुवाद' ही कर सकता है।